International Journal of Arts & Education Research

''वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में आचार्य श्रीराम शर्मा के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता''

प्रवीन कुमार
शोध छात्र, साईं नाथ विश्वविद्यालय,
राँची, झारखण्ड।

सुरक्षा बंसल
शोध निर्देशिका
(गांधी इंस्टीटयूट ऑफ प्रोफेशनल एण्ड टेक्निकल स्ट्डीज)

शोध सारांश

आचार्य श्रीराम शर्मा जी का शिक्षा दर्शन अत्यन्त सरल एवं व्यवहारिक है। उन्होंने बताया है कि शिक्षा व्यक्तिगत जीवन, समाज परिवार, एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूरा करे तथा बालक को जीवन की यथार्थता से परिचित कराये। व्यक्ति स्वयं को पहचाने तथा अपने चित्त की वृत्तियों का शोधन करना सीखे तभी शिक्षा पद्धति सार्थक को सकेगी। वर्तमान में शिक्षा से व्यक्ति एवं समाज की अपेक्षाये अधूरी एवं निराशात्मक है। अतः शिक्षा को जीवन की यथार्थता से जोड़े जाने की नितान्त आवश्यकता हैं शिक्षा पर खर्च होने वाले समय, धन एवं शक्ति का तभी उचित लाभ समाज व राष्ट्र को प्राप्त हो सकता हैं। आचार्य जी द्वारा व्यक्ति उपरोक्त विचार से शिक्षा पद्धति को उपयोगी एवं प्रभाव पूर्ण बना सकते है।

''आचार्य जी का व्यक्तित्व महाक्रान्ति का पर्याय बनकर उभरा है। वह उन विरल प्रज्ञा पुरूषों मे थे जिनमे ऋषित्व और मनीषा एकाकार हुई थी। जिन्होंने धर्म का आच्छादन तोड़ने दर्शन को बुद्धिवाद के चक्रव्यूह से निकालने की हिम्मत जुटाई धर्म–दर्शन और विज्ञान के कटु–तिक्त कषाय हो चुके सम्बन्धों की अपनी अन्तर्प्रज्ञा की निर्झरिणी से पुनः मधुरता प्रदान की। अवतारी प्रवाह सदा एक ही लक्ष्य सामने लेकर आते रहे है समय की दार्शनिक भ्रष्टता को दूर कर उसे उच्च स्तरीय चिन्तन स्तर तक घसीट ले जाना।''

देश के जीवन में विभिन्न क्षेत्रों और स्तरों पर जो अन्धकार और निराशा हमे घेरे हुए है उनमें आशा की किरण आचार्य श्री राम शर्मा के शैक्षिक विचारों के द्वारा ही प्रकाशित हो सकती है। उनका शिक्षादर्शन

वर्तमान शिक्षा के दोषों का निवारण करके आदर्श शिक्षा प्रणाली की संरचना में सार्थक योगदान दे सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति आचार्य श्री राम जी के विचारों से प्रेरणा ले।

प्रस्तावना

इतिहास में कभी–कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों मे प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नही, पूरी वसुधा के उद्वार–चेतनात्मक धरातल पर सबके मनो का नये सिरे से निर्माण करने आती है। परमपूज्य गुरूदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों–युगों में गुरू एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई। अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट ज्योति प्रज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषिचेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग–परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है। परमवन्दनीया माता जी शक्ति का रूप थी, जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी माँ शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है। उसने भी सूक्ष्म मे विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरूष का अंग स्वयं को बना लिया। आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुन्ज, ब्रहावर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानीगणों के वीरभ्रदों की करोड़ो से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है।''

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् 1967 (20 सितम्बर,उ 1911) की स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम, जनपद आगरा, जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पन्द्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल–कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता। वे जन्में तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता श्री पं० रूपकिशोर जी शर्मा आस–पास के, दूर–दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अन्तःकरण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित

रहता था। साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा। जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ–साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे, छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उन्होंने सम्बन्धियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वही वे जा रहे थे। किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं किशोरावस्था मे ही समाज सुधार को रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उसने चलाना आरम्भ कर दी थी। औपचारिक शिक्षा स्वलप ही पायी थी किन्तु उन्हें इसके बाद आवश्यक भी नहीं थी। क्योंकि जो जन्मदाता प्रतिभासम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट–बाजारों में जाकर स्वास्थ्य शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखे तथा स्वायलम्बी कैसे बने इसके छोटे–छोटे पैम्फलेट्स लखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नही थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव मे जन्में इस लाल ने नारीशक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया वह उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाएँ, अपने पैरो पर कैसे खड़ा हुआ जाएँ यह सिखाया।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमे शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जनआक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोरकाल की क्रान्तिकारी स्थिति की तरह उन्होंने भी वे कार्य किये, जिनमे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था। नमक आंदोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्रदेवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आंदोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं।

''1935 के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरू हुआ, जब गुरूसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरूदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शान्तिनिकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये। सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतन्त्रता की

बेड़ियों से मुक्त किया जाये, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत चलाते हुए उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया, जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक, सम्पादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाबराय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए

युग निर्माण योजना व 'युगनिर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणापत्र 1963 में प्रकाशन हुआ। तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तरह की निवासस्थली बन गया, जहाँ रहकर उन्होंने अपनी शेष तप–साधना पूरी की थी, श्रीराम शर्मा आचार्य भारत के एक युगदृष्टा मनीषी थे जिन्होंने अखिल भारतीय गायत्री परिवार की स्थापना की। उन्होंने अपना जीवन समाज की भलाई तथा सांस्कृतिक व चारित्रिक उत्थान के लिये समर्पित कर दिया। उन्होंने आधुनिक व प्राचीन विज्ञान व धम्र का समन्वय करके आध्यात्मिक नवचेतना को जगाने की कार्य किया ताकि वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना किया जा सके। उनका व्यक्तित्व एक साधु पुरूष अध्यात्म विज्ञानी, योगी दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक लेखक, सुधारक, मनीषी व दृष्टा का समन्वित रूप था।

आचार्य श्री राम शर्मा के अनुसार शिक्षा का अर्थः– ''सुसंस्कारिता का प्रशिक्षण हैं इसे नैतिकता, सामाजिकता, सज्जनता, प्रामाणिकता आदि किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है।

नैतिक शिक्षा अलग नाम दे देने से तो वह शिक्षाशास्त्र की एक विद्या बनकर रह जाती है। उसे तो शिक्षा का एक अभिन्न अंग मानते हुए सुसंस्कारिता का व्यावहारिक शिक्षण मानकर, उसे समग्र शिक्षण में गुँथकर चलना चाहिए।

शिक्षा की सार्थकता तभी है, जब वह शिक्षार्थी को मानवी गरिमा के अनुरूप सत्प्रवृत्तियों से अभ्यस्त करा सके। क्योंकि उसी के आधार पर संबद्ध कार्यों मे सफलता मिलती है। तीक्ष्ण बुद्धि का होना संयोग की बात है। वह किसी में जन्मजात रूप से होती है, किसी में परिश्रम करने पर भी थोड़ी मात्रा में बढ़ पाती है। किंतु चिंतन और चरित्र में सत्प्रवृत्तियों का समावेश होना, यह पूरी तरह शिक्षण का विषय है।

आचार्य श्री राम शर्मा जी के अनुसार शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध– शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धों में जिस मधुरता, सहजता और अन्योन्याश्रितता की भावना पर बल दिया है, वह आज के युग में अत्यन्त आवश्यक है। आचार्य जी के अनुसार शिक्षक अपनी गरिमा व कार्य के महत्व को समझे तथा उसी के अनुरूप पूरी निष्ठा व ईमानदारी से कार्य करें, ताकि अपने सम्मान को प्राप्त कर सकते है। छात्र अध्यापक के आचरण व व्यवहार से प्रभावित होते हैं, अतः अध्यापक अपने आचरण व ज्ञान से अच्छे मानव के रूप में बालकों का निर्माण करे। अतः अपने पद के अनुरूप अध्यापक को अपने कर्त्तव्य को समझना ही होगा तभी शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धों में पुनः सहजता का प्रवेश हो सकेगा। शिक्षक के सम्बन्ध में आचार्य जी के विचारों से प्रेरणा लेकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन क्रान्ति को जन्म दिया जा सकता है।

पाठयक्रम

वर्तमान में इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की जा रही है कि जीवन के आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और मूल्यों पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। इसके लिए आचार्य श्री राम द्वारा अत्यन्त व्यवहारिक पाठ्यक्रम के निर्माण की सन्तुष्टि की गयी है। प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम मूल्यों एवं जीवन में काम आने वाली समझदारी, ईमानदारी, बहादुरी, एवं नैतिक शिक्षा आदि हो अतः आचार्य जी के विचारों के अनुसार वर्तमान में पाठ्यक्रम को नैतिक मूल्यों, क्रियाशीलता व व्यवहारिकता से जोड़कर प्रस्तुत करने से जीवन के आवश्यक मूल्यों की पुनः स्थापना होने की सम्भावना है।

आचार्य श्रीराम जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य–

व्यक्तित्व का सर्वांगीण अन्तर्निहित गुणों का विकास स्वावलम्बन व्यक्तित्व का निर्माण तथा सामाजिक सदभावना का विकास करना है।

शिक्षण विधिः–

शिक्षण विधियों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्ति हेतु व्याखान तर्क विचार–विमर्श, स्वानुभव, स्वास्थ्य आदि विधियों को आचार्य जी ने महत्वपूर्ण माना है तथा चितवृत्तियों के शासन व मन व केन्द्रीयकरण के लिए व्रताभ्यास, योग, ध्यान, व्यायाम खेलकूद आदि विधियों को आवश्यक माना है। छात्रों के उचित शारीरिक, मानसिक व भावात्मक विकास हेतू आचार्य जी द्वारा बताई गई शिक्षण विधियों का प्रयोग सफल सिद्ध हो सकता है।

अनुशासन

अनुशासनहीनता की समस्या आज देशव्यापी बन चुकी है, इसके लिए आचार्य श्री राम शर्मा का कहना है कि अनुशासन के बीज बालको से प्रारम्भिक अवस्था से ही बो दिये जाने चाहिए। पाठ्यक्रम के साथ–साथ अनुशासन का अभ्यास कराया जाये। मानसिक शून्यताओं में जन्मी हीन भावना को दबाने के लिए ही अयोग्य छात्र अनुशासन हीनता करते हैं अतः छात्रों में श्रम के प्रति आस्था एवं सामाजिक व नैतिक मूल्यों में दृढ़ विश्वास जगाना होगा। इसके लिए आचार्य जी ने पढ़ाई के साथ–साथ खेल–कूद, स्काउटिंग, श्रमदान आदि क्रियाओं को अनुशासन के विकास में सहायक बताया है। अनुशासन को आत्म नियंत्रण से आत्म स्वामित्व का विकास उन्होंने बताया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यालयों में आत्मानुशासन का विकास ही अनुशासन के भाव को दृढ़ करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

स्त्री शिक्षा के प्रति विचारधारा

नारी शिक्षा के सम्बन्ध में भी आचार्य जी के विचार वर्तमान समय में प्रेरणा के श्रोत है, वे चाहते थे नारी शिक्षा प्राप्त करके स्वावलम्बी बने किन्तु ही गृहविज्ञान, शिशुपालन संगीत आदि की शिक्षा भी प्राप्त करे। श्रेष्ठ नारीत्व के गुणों की रक्षक एवं संवाहक शिक्षित नारी बने। फैशन परस्ती व अहंकार से स्वयं को बचाते हुए परिवार, समाज व राष्ट्र की प्रगति में अपनी भूमिका सार्थक करे। वास्तव में शिक्षित नारी यदि आचार्य जी के विचारों के अनुरूप जीवन–निर्माण करेगी, तो राष्ट्र की प्रगति तेजी से हो सकेगी।

धार्मिक शिक्षा

धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में आचार्य श्री राम शर्मा जी धर्म के अत्यन्त व्यवहारिक स्वरूप को बताया गया है उनके द्वारा दिये गये 'युग धर्म के दस लक्षण' व्यवहारिक नीति नियमों का वर्गीकरण है, जो बालकों के नैतिक, चारित्रिक धार्मिक, सामाजिक, व्यक्तिगत विकास हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

संदर्भ

- आचार्य श्रीराम शर्मा– युगद्रष्टा का जीवन दर्शन अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा
- युग निर्माण योजना – मई 2009
- आचार्य श्रीराम शर्मा– अखण्ड ज्योति अंक 67
- शर्मा वी.डी.– शंकराचार्य का शिक्षा दर्शन
- आचार्य श्रीराम शर्मा– धर्म और विज्ञान विरोधी नही पूरक